सत्य साहित्य

सत्य साहित्य, श्री रामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका
वर्ष 8 / अंक 1, अक्टूबर 2024 • Year 8 / No. 1, October 2024

श्री राम

जिनके हृदय हरि नाम बसे
तिन और को नाम लिया न लिया।

(1) जिन के द्वारे पर गंगा बहे, तिन कूप को नीर
पिया न पिया। जिनके ---

(2) जिन काम किया परमारथ का, तिन हाथ से
दान दिया न दिया। जिनके ---

(3) जिनके घर एक सपूत भयो, तिन लाख कपूत
भया न भया। जिनके ----

(4) जिन मात पिता की सेवा करी, तिन तीरथ बरत
किया न किया। जिनके ----

(5) तुलसीदास विचारि कहे, कपटी को मीत
किया न किया। जिनके हृदय ----

(परम पूजनीय महाराज जी की डायरी से)

इस अंक में पढ़िए

- भजन
- Karma
- चैतन्य भाव
- ब्रह्मविद्या
- श्रीरामशरणम् : एक ऐतिहासिक विवरण
- विभिन्न केन्द्रों से
- आप बीती
- बच्चों के लिए
- कैलेन्डर

सत्य साहित्य
मूल्य (Price) ₹5

बधाई

Kindly read Gita daily & also recite Ram Ram Ram Ram. You shall remain happy. When God has blessed you with everything you must keep on communicating but it is only HIS Blessings which shall help you. & HIS Blessings you can only seek if you recite Ram Ram. May God bless you. Prem

कृपया रोज़ गीता पढ़ें और राम राम राम राम का जाप करें। आप खुश रहेंगे। जब भगवान् ने आपको सब कुछ प्रदान किया है, तो आपको निरंतर उनके प्रति धन्यवाद प्रकट करते रहना चाहिए। केवल उनकी कृपा ही आपकी मदद करेगी और उनकी कृपा आप तभी प्राप्त कर सकते हैं जब आप राम राम का जाप करेंगे। परमात्मा आप पर कृपा करें।

May you too be blessed with sukh & shanti through HIS Grace. Congratulations to all of you on this most auspicious occasion of Diwali. Loving pranam. [signature]

आप भी उनकी कृपा से सुख और शांति से परिपूर्ण हों। दिवाली के इस महामंगलिक सुअवसर पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं। स्नेहपूर्ण प्रणाम। वि.मि

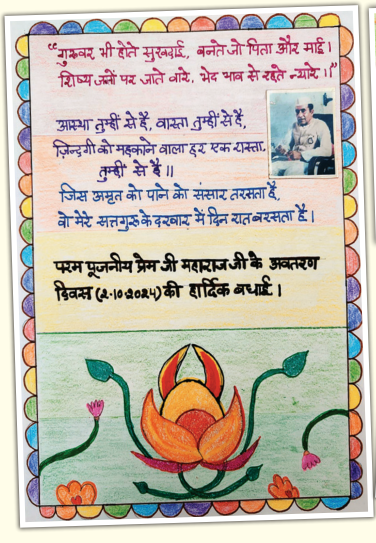

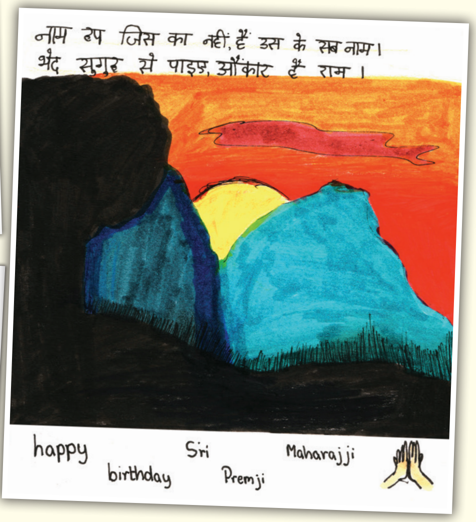

Karma

सत्यानन्द

In the Upanishads, the concept of Dharma is explained, encompassing various charitable (purta) deeds and desired (isht) actions. Worship of deities, gurus, and the virtuous, and performing sacrificial rituals according to prescribed methods are all considered part of desired (isht) actions. (1)

Understand meditation, knowledge, and all forms of worship as integral parts of desired (isht) actions. All these practices are highly auspicious and virtuous, dispelling the darkness of delusion. (2)

Know that charity, compassion, and exercising restraint are indeed considered the noblest duties of man. This is what Prajapati (the Lord of beings) has declared, and the sages have extolled it as the best path of self-improvement. (5)

Making one's progeny cultured and well-educated, engaged in righteous actions and enriched with knowledge – this is Dharma as taught by all the wise sages and saints. (8)

Gurus are those who are knowledgeable, steadfastly devoted to Brahman, pure devotees, and dedicated to meditation. Gurus are well-versed in the sacred texts of Shruti (Vedas) and Smriti (traditional scriptures), and worthy of reverence, like a father and mother. (9)

Who are selfless, who adhere to truth, whose deeds, thoughts, and character are noble, who dispel all darkness of delusion and doubt, who save people and take them across the ocean of life on the sacred boat of the divine name. (10)

Giving up vain argumentation and fallacious reasoning, with faith and devotion, receive instructions, practice them, and perform good deeds. This will eradicate all sins, sufferings and doubts. (12)

Recognize revered mother as the first Guru, and the father as the second Guru. Also respect and serve that Guru who gives the sacred thread and imparts education and scriptural knowledge. (13)

Know him to be the spiritual guru who imparts the holy name of the Lord, bestows the gift of devotion, and is deeply meditative. With the knowledge of Truth, he dispels the darkness of ignorance and ushers in the dawn of pure sentiments. (14)

He must have a strong desire for liberation and should cultivate the qualities of patience, forgiveness, and compassion in his heart. He should uphold the auspicious virtues of equanimity, contentment, and truth, while avoiding selfishness, sin, and all faults. (18)

He should be a devout devotee dear to God, striving to free himself from the bondage of Karma. He should have a keen desire to know his soul, and aspire to realize the state of self-realization. (19)

Immersed in love, with a mind inclined towards goodness and virtuous thoughts, upholder of auspicious vows of name repetition and righteousness, engaged in the welfare of others and helpful to all, know such a person to be deserving. (20)

Selected verses from Upanishad Saar - Karma, Bhakti Prakash, Pg No. 242-244. ■

चैतन्य भाव

प्रेम

न देवो विद्यते, काष्ठे,
न पाषाणे, न मृण्मये।
भावे हि विद्यते देव:,
तस्मात् भावो हि कारणम्।।
'जाकी रही भावना जैसी,
प्रभु मूर्ति देखी तिन तैसी।'

हम अपनी भावना कम बनाते हैं, इस का मनन होना चाहिए। भावना स्थिर हो जाती है, फिर विचलित नहीं होती। सजग – अपना भाव चैतन्य करना चाहिए। जब–जब जाप करते हैं तो कृपा अवतरित होनी शुरू हो जाती है, ऐसा एक ही बार मन में कहना चाहिए।

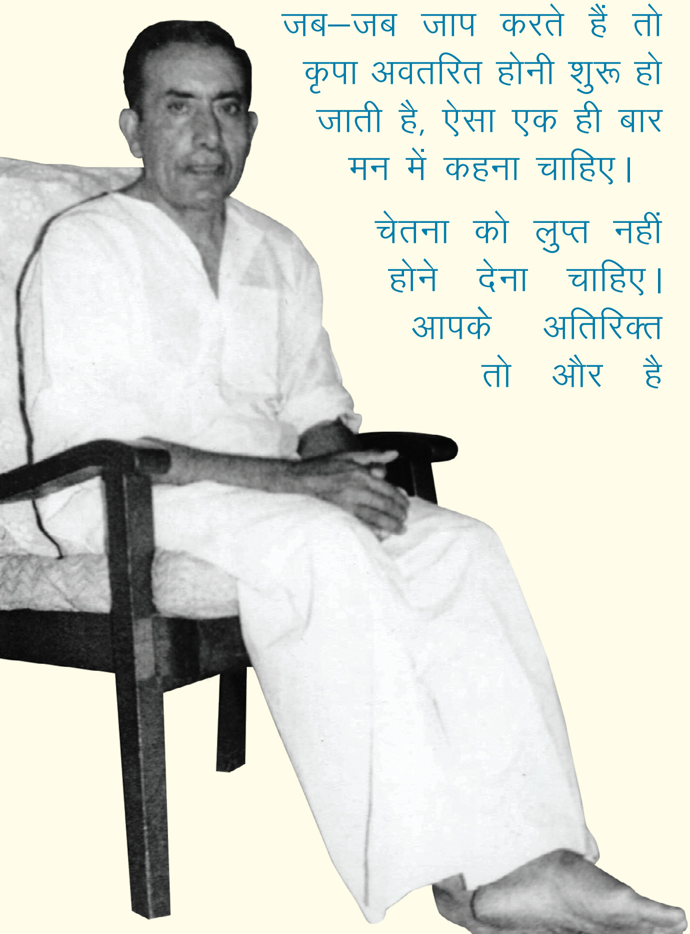

चेतना को लुप्त नहीं होने देना चाहिए। आपके अतिरिक्त तो और है नहीं। अपने आपको दबाना नहीं चाहिए। अपने आप भावना बनानी चाहिए, अपने आपको सजग रखना चाहिए। जैसे व्रत करने वाला अपने आप रुक जाता है। अपनी चेतन शक्ति को, will power को दबने न दें। जब चाहूँ अपने आपको रोक लूं।

विपरीत भाव नहीं होना चाहिए। परमेश्वर की कृपा तो कोमल है। माँ का हाथ पीठ पर पड़े तो आनन्दमय होगा। अपने आपको आप बहुत प्रिय होता है। जब नीचे से, अन्त:करण से पुकार होती है तो अवतरण अपने आप होता है।

'जिन ढूंढया तिन पाया।' जितनी माँग जबरदस्त होगी उतनी कृपा तीव्र होगी।

माँग के कारण ही हमारा देश स्वतन्त्र हुआ, बिना हथियार के। उस प्रबल माँग ने प्रकृति को कम्पन कर दिया। इतनी तरंगें पैदा हुईं कि इतनी बड़ी कौम इस देश की माँग को पूरा करके आदर भाव से चली गई।

माँग जितनी होगी, ज्ञान उतना ही बढ़ेगा। माँग, सब कुछ पैदा कर देगी। मांग ही ज़्यादा होनी चाहिए। प्रकृति में देखते हैं जिस चीज़ की माँग हुई वह पूरी हुई।

''जे तैनूं यार मिलन दी चाह, सिर धर तली, गली मेरी आ।'' यह माँग यदि सिर दे कर सौदा करने से भी मिले तो भी सस्ती जान।

पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज की डायरी में से।

• ब्रह्मविद्या : ईश्वर सर्वव्यापक - सर्वान्तर्यामी, अतः सबके साथ सद्व्यवहार हो, समदर्शी। उससे छिप कर कुछ नहीं कर सकते, कोई भी उसकी मार से बच नहीं सकता।। अतः सबके साथ सज्जनता व शालीनता का व्यवहार। उसके मार्यदा - कानूनों अनुसार, आज्ञानुसार चलें, उसकी कृपा पाइये। उल्लंघन न कर दण्ड से बचें।

ब्रह्मविद्या

विश्वामित्र

जो दूसरों को सम्मान देता है परमात्मा उसे सम्माननीय बना देते हैं। जो दूसरों को आगे करता है परमात्मा उसे सबसे आगे खड़ा कर देते हैं, जो दूसरों को देने में कंजूसी करता है परमात्मा उसे भी देने में कंजूसी करते हैं। कुछ एक सिद्धांत हैं परमात्मा के, वह इनसे प्रायः टस से मस नहीं होता। दूसरों को सम्मान देना चाहिए, दूसरों को आगे करने का स्वभाव होना चाहिए। सम्मान किस प्रकार का? कोई बड़ा व्यक्ति किसी छोटे से पूछता है तो सोचें कितना बड़ा सम्मान दे रहा है वह व्यक्ति। छोटों की भले ही इसमें महानता नहीं है लेकिन बड़ा जो पूछ रहा है कितनी महानता है उसकी। हम किसी को बताना नहीं चाहते। सब कुछ अपने पास ही रखना चाहते हैं। हम पूछना भी नहीं चाहते। देने वाला देता नहीं, जिसके पास कुछ बताने योग्य है वो बताता नहीं, पूछने वाला पूछता नहीं, दोनों ही अपने अभिमान को सुरक्षित रख रहे हैं। छोटी–छोटी बातें हैं तनिक खोज कर देखो तो पता लगता है कि हम इनसे अभी ऊपर नहीं उठ पा रहे। बड़ी बातों की तो क्या बात करनी है? किसी को बताने में हम अपना छोटापन महसूस करते हैं, किसी को पूछने में हम अपना छोटापन महसूस करते हैं। हम सोचते हैं कि जरूरत होगी अपने आप पूछ लेगा। ये सबके सब अपने–अपने अभिमान को सुरक्षित रखने की बातें हैं।

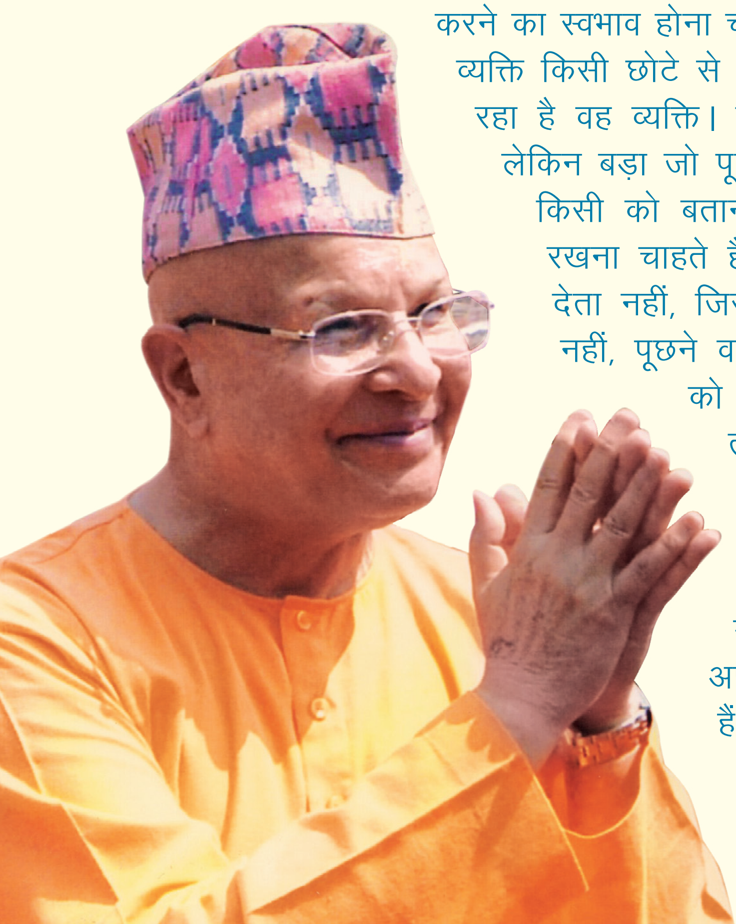

केन उपनिषद् से चर्चा चल रही थी। अग्निदेव जाते हैं पता करने कि जो व्यक्ति प्रकट हुआ है, ये कौन है? कोई यक्ष दिखाई देता है। अग्नि को उच्च देवता माना जाता है, जिह्वा का देव। गए हैं अग्निदेव, जा कर यक्ष से राम राम हुई है। उनके पास गया तो अभिमानी बन कर लेकिन उस यक्ष ने, उस परमात्मा ने उसका अभिमान चकनाचूर कर दिया है। कौन हैं आप? कैसे आए हैं? क्या गुण हैं आप के अन्दर, यक्ष ने ये प्रश्न पूछे हैं उनसे? ऐसा मानने वाला व्यक्ति कि संसार में ऐसा कोई है जो मुझे नहीं पहचानता। ऐसे व्यक्ति को यक्ष ने तत्काल पहचानने से इन्कार कर दिया। कौन हैं आप? मैं नहीं जानता आपको।

मैं अग्नि हूँ। क्या कोई संसार में ऐसा है जो अग्नि को नहीं जानता? अग्नि के गुण को नहीं पहचानता? ये सब अभिमान के चिह्न हैं और भगवान् ने एक बार में अभिमान को मिट्टी में मिला कर रख दिया। कौन हैं आप? क्या गुण है आपका? मानो, कह रहे हैं कि मैं नहीं पहचानता आपको। मैं अग्नि देव हूँ। उन्होंने कहा, ''क्या करते हैं आप?'' ''छूने मात्र से, (फू–फू) ऐसे करने से देखने मात्र से मैं संसार की किसी भी चीज को जला सकता हूँ, सारे संसार को जला कर राख कर सकता हूँ।'' अग्निदेव ने जवाब दिया। वाह शाबाश! एक तिनका उठाया है यक्ष ने, ये तिनके को जला कर दिखाओ। ज़ोर लगा रहे हैं, पर अग्निदेव उस तिनके को जला नहीं पाए। मुँह लटका कर बिना पूछे (कि आप कौन हैं, खोज करने के लिए आए थे कि ये व्यक्ति कौन है) वापिस लौट गए। दूर बैठे अन्य देवता इस सारे तमाशे को देख रहे हैं। वायु ने अपने आपको offer किया,'' मैं जाऊँ?'' देवताओं ने कहा, ''आप जाइए पता करके आइए ये व्यक्ति कौन है।'' वायु देव गए हैं, वही प्रश्न उनसे पूछा – कौन हैं आप, क्या गुण हैं आपके अन्दर,क्या कर सकते हैं? उन्होंने कहा मैं सारे संसार में सुगन्ध फैलाता हूँ, दूर–दूर तक सबको प्राण प्रदान करता हूँ इत्यादि–इत्यादि, अपने गुण बताए हैं। किसी भी चीज़ को उड़ा सकता हूँ (फू) ऐसे करने से संसार की किसी भी चीज को उड़ा सकता हूँ। ''ठीक है,'' यक्ष ने वही तिनका जो पहले को दिया था, उठा कर वायु देव को दे दिया है। लो भाई! इसको उड़ा के दिखाओ। वही हालत उसकी भी हुई है। वायुदेव भी मुँह लटका कर आ गए। कहाँ ये लोग बैठे–बैठे विजय की डींगें मार रहे थे कि मेरे कारण विजय हुई है, मेरे कारण विजय हुई है।

जब व्यक्ति अपना बड़प्पन करता है तो उसके अन्दर एक natural सी tendency होती है कि वह दूसरों को नीचा ही दिखाता है। ये स्वाभाविक है इसमें कुछ करने की ज़रूरत नहीं, ये चीज़ें अपने आप ही होती जाती हैं। ये सब बैठे वहाँ पर यही सब कुछ कर रहे थे। दोनों मुख्य देवताओं का अभिमान परमात्मा ने मिट्टी में मिला दिया है, राख कर दिया है। दोनों चले गये हैं मुँह लटका के। देवता इस चीज़ को बहुत अपमानित मान रहे हैं। उन्होंने इन्द्र देवता से जो वहीं बैठे हुए हैं, प्रार्थना करते हैं कि ''जाइए देवराज! आप पता कीजिएगा कि ये व्यक्ति कौन हैं? कहीं परब्रह्म परमात्मा स्वयं तो नहीं आ गए हैं हमारी बुद्धि को ठीक करने के लिए।'' मानो उन्हें अपनी भूल तो पता लग गई है कि कुछ अभी ग़लती हो रही थी जिसको सुधारने के लिए ये महापुरुष सामने आए हैं। इन्द्र देवता

चल पड़े हैं यक्ष की ओर और यक्ष चल पड़े हैं इन्द्र देवता से दूर लोप हो गए हैं, अंतर्ध्यान हो गए हैं, दिखाई नहीं दे रहे हैं। क्या करूँ अब? किससे पूछूँ? क्या मैं भी ऐसे ही वापिस लौटूँगा वे वहीं थोड़ी देर के लिए बैठ गए हैं।

माँ सीता ऐसे शब्द प्रयोग करतीं हैं रावण को मारने वाला, मारीच को मारने वाला इत्यादि इत्यादि। जितनी भी घटनाएँ हैं एक-एक घटना को लेकर - मैं हूँ सब करने वाली। माँ सीता तत्त्व बोध दे रहीं हैं हनुमान जी महाराज को। भगवान राम के कहने पर, सीते! हनुमान को तत्व बोध दो, प्रदान करो। अध्यात्म रामायण में इस बात का वर्णन आता है

कुछ कहते हैं कि ध्यान में बैठे इन्द्र देवता, कुछ कहते हैं वैसे ही बैठे। स्वामी जी महाराज तो लिखते हैं उमा नाम की एक महिला वहाँ दिखाई दी है। अन्य लोग ऐसा मानते है कि ये हिमाचल पुत्री, भगवान शिव की प्रिय पत्नी उमा, जिन्हें मातेश्वरी जगदीश्वरी माँ दुर्गा कहा जाता है वह प्रकट हुई हैं। कुछ भी कह लो एक दिव्य शक्ति एक ज्योतिर्मयी शक्ति वहाँ प्रकट हुई है। वह समझाती हैं कि इन्द्र तुम सब मूर्ख हो। विजय का श्रेय स्वयं ले रहे थे मूर्खो! परमात्मा की शक्ति के बिना क्या औकात है आपकी? एक तिनका न जला सका अग्नि देव, न वायु देव एक तिनके को उड़ा सका। क्यों? उस परमात्म देव ने, उस परब्रह्म परमात्मा ने, अपनी दी हुई सारी की सारी शक्ति खींच ली। वह मानव का निर्माण करता है, दानव का निर्माण करता है देवों का निर्माण करता है और शक्ति अपनी प्रदान करता है, लो अब जाकर काम करो। हम मूर्ख इस बात को न मान कर तो हम स्वयं शक्तिमान् हो जाते हैं। यूँ कहिएगा यदि पहले परब्रह्म परमात्मा आए हैं तो अब परमात्मा की शक्ति आ गई हुई है बताने के लिए कि मैं सब कुछ करने वाली हूँ। परब्रह्म परमात्मा अपने मुख से बेचारे कुछ नहीं बोलते, मुझे आगे कर देते हैं कि जा तू इनको समझा जाकर। बता इनको कि मैं हूँ सब कुछ करने–कराने वाली। मातेश्वरी सीता हनुमान जी महाराज को दिव्य उपदेश देती हैं, तत्व बोध देती हैं। वहाँ अध्यात्म रामायण में बड़ा सुन्दर वर्णन आता है। वहाँ वह कहतीं हैं "क्या तू सोचता है कि ताड़का को तेरे राम ने मारा? क्या तू सोचता है भगवान शिव का धनुष भंग करने वाला तेरा राम है? क्या तू ये सोचता है परशुराम का धनुष चढ़ाने वाला तेरा राम है?"। माँ सीता ऐसे शब्द प्रयोग करतीं हैं रावण को मारने वाला, मारीच को मारने वाला इत्यादि इत्यादि। जितनी भी घटनाएँ हैं एक–एक घटना को लेकर – मैं हूँ सब करने वाली। माँ सीता तत्व बोध दे रहीं हैं हनुमान जी महाराज को। भगवान् राम के कहने पर, सीते! हनुमान को तत्त्व बोध दो, प्रदान करो। अध्यात्म रामायण में इस बात का वर्णन आता है "अरे! तेरा राम तो इस संसार में इस प्रकार से फँसा हुआ है न इधर हिल सकता है न उधर हिल सकता है। He is so packed! कोई बोतल लो, कोई डिब्बा लो, उसमें किसी चीज़ को फिट कर दो, आप हिलाना चाहो तो हिला नहीं सकते बिलकुल ठीक इसी प्रकार से परब्रह्म परमात्मा की हालत है वह तो हिल नहीं सकता। इसीलिए ज्ञान ठोक बजा कर कहता है वह

परब्रह्म परमात्मा जिसे कहा जाता है वह तो निष्क्रिय है वह तो कुछ नहीं कर सकता। जैसे बहुत बड़ी बैटरी क्या दिखाई देती है? एक बक्सा। उसके अन्दर देखो क्या है? जो अन्दर है वह है शक्ति। वह शक्ति के अंश हम सबके अन्दर विराजमान हैं। तो हम कुछ भी नहीं हैं अन्यथा हम कुछ नहीं करने वाले बिल्कुल शव। माँ समझाती है इन्द्र वास्तविक विजय वही नहीं है जिसकी तूती आप लोग बजा रहे थे। वास्तविक विजय वह है कि आप अपने देहाभिमान से शून्य हो जाओ तो ये वास्तविक विजय है। ये असली जीत है। जिसको ये बोध हो गया कि मेरे अन्दर अपनी शक्ति कोई नहीं, मेरे अन्दर अपना सामर्थ्य कोई नहीं। सब परमात्मा का दिया हुआ है, परमात्मा किसी वक्त भी अपनी शक्ति को खींच कर हमें शक्तिहीन बना सकता है, हमें शव बना सकता है। वही होता है। जब मर जाते हैं तो क्या होता है? परमात्मा अपनी शक्ति खींच लेता है तो चारपाई उठाकर ले जाते हैं। उसे जलाने के लिए अब ये किसी काम का नहीं, शव हो गया है।

आज उपनिषद् सार के अन्तर्गत स्वामी जी महाराज ने प्रथम प्रसंग लिया है कर्म। इसमें बृहदारण्यक उपनिषद् की कथा का वर्णन आया है। ब्रह्मा जी ने सृष्टि रची है, मानव की सृष्टि करी है, असुरों की सृष्टि करी है, देवों की सृष्टि करी है, पहाड़ों की सृष्टि, सारी पृथ्वी की सृष्टि करी है। तरह–तरह की सृष्टि का निर्माण किया है। सारा ब्रह्मांड बनाया है, बहुत सुन्दर बनाया है। आप देखते हो, आनन्दित होते हो। वाह ब्रह्मा जी! क्या कमाल कर दी है आपने। सारे का सारा सौंदर्य इसमें डाल दिया है ताकि इंसान देखे तो वह प्रसन्न हो, असुर देखे तो वह प्रसन्न हो, देवता देखें तो वह निहाल हों, हरेक प्रसन्न हो। प्रसन्न किस लिए करना है? इसलिए कि जो प्रसन्नता प्रदान करने वाला है उसकी याद आए। न कि इसमें फँसने के लिए। हर बात ब्रह्मा जी ने जो रची है वह सिर्फ इसलिए कि विधाता की याद आए। उस परब्रह्म परमात्मा की याद आए। फूल देखा तो याद आई परमात्मा की, वाह परमात्मा! कोई ऐसा इंसान इस संसार में नहीं दिखाई देता जो इस जैसा फूल बना दे। इतना शानदार! इतना रंगीला! इतना सुगंधित! इतनी सुन्दर इसकी महक! अपने आप किस ढंग से खिलता है किस sequence में खिलता है। आदमी इन बातों को देखता रहे तो हर वक्त परमात्मा की याद, स्मृति बनी रहती है स्मरण बना रहता है। क्या सुन्दर–सुन्दर रंग निकलते हैं। पहले किस प्रकार का होता है, फल देखो पहले हरा होता है ताकि पंछियों इत्यादि से बचा रहे। उसके बाद उस पर थोड़ा–थोड़ा रंग आना शुरू हो जाता है। पक जाता है तो कितना रंगीला हो जाता है फल। जितना रसीला हो जाता है फल उतना पेड़ झुकने लग जाता है। ये सब चीजें परमात्मा की याद दिलाने वाली हैं। ये सब चीजें हमें सिखाने वाली हैं। अरे! बड़े बने हो, कुछ बने हो, कुछ ज़िंदगी में बने हो तो छोटा होना सीखो। **पेड़ सिखाता है- जैसे-जैसे फल पकते जाते हैं वैसे-वैसे पेड़ नीचे झुकता जाता है।** पके हुए फलों के पेड़ की तरह इन्सान को भी झुकना सीखना चाहिए।

(श्री महाराज जी के प्रवचन, 4.4.2007 का अंश, क्रमशः अगले अंक में) ■

श्रीरामशरणम् - एक ऐतिहासिक विवरण : कल्याणपुरा म.प्र.

(श्रीरामशरणम् एक ऐतिहासिक विवरण के अन्तर्गत लेखों की अगली कड़ी)

एक कस्बा (ग्राम) कल्याणपुरा, झाबुआ जिला से 15 कि. मी. दूरी पर स्थित है। जहाँ की जनसंख्या लगभग 3000 (तीन हज़ार) है। वहाँ अमृतवाणी सत्संग सायं 7 से 8 बजे नियमित रूप से एक मन्दिर में संचालित होता था।

कल्याणपुरा में एक मोहल्ले में मन्दिर है जहाँ 15 से 20 व्यक्ति ही बैठ सकते थे। इसके अतिरिक्त साधक भाई–बहनों को नीचे सड़क पर बैठकर पाठ करना होता था। उसी रास्ते से पशु–पालक अपने गाय, भैंस, बकरी आदि संध्या को वापस लेकर आते थे। 3 से 4 बार चलते सत्संग में पाठ कर रहे साधकों को उठकर इधर–उधर के मकानों के आहाते में दौड़ कर जाना पड़ता था। पशुओं के गुजर जाने पर फिर बैठते थे। ऐसा कई महीनों से चल रहा था।

2008 में परम पूजनीय डॉ. विश्वामित्रजी महाराज मुम्बई के सत्संग के बाद ट्रेन से झाबुआ में आयोजित खुले सत्संग में पधारे थे। पूर्व में उन्होंने झाबुआ के साधकों को निर्देश दिए थे कि चूँकि झाबुआ जिला मुख्यालय पर सर्वसुविधायुक्त एवं 1250 साधकों की क्षमता वाला विशाल श्रीरामशरणम् बन चुका है, अब यहीं से आस–पास के सभी क्षेत्रों की आध्यात्मिक ज़रूरतों की पूर्ति होती रहेगी अस्तु अब क्षेत्र में कोई निर्माण नहीं करना है ।

कल्याणपुरा की उक्त वर्णित स्थिति जब पूज्य श्री महाराज जी को बताई तो उन्होंने वहाँ अमृतवाणी सत्संग हॉल बनाने की स्वीकृति प्रदान कर दी लेकिन यह शर्त रखी कि वह झाबुआ की पंजीकृत समिति की संपत्ति रहेगी और यहाँ के निर्देशानुसार ही गतिविधियाँ चलेंगी। यह बात तत्काल सभी साधकों को ज्ञात हो गई। कल्याणपुरा के दो साधकों ने आकर बताया कि उन्होंने एक बड़े भूखण्ड का निजी उपयोग हेतु सौदा कर कीमत भी दे दी है, वह हम समर्पित करते हैं, आप झाबुआ के नाम से रजिस्ट्री करवा लें। उसी समय एक अन्य साधक ने रजिस्ट्री में लगने वाली राशि भी दे दी ।

रजिस्ट्री के बाद वहाँ निर्माण कार्य आरम्भ हो गया और ग्यारह माह की अल्प अवधि में भवन तैयार हो गया। यहाँ भी झाबुआ की तर्ज पर स्थानीय साधक परिवारों ने सतत कार सेवा कर मज़दूरी का पैसा बचा लिया, केवल तकनीकी व कुशल श्रमिकों को ही भुगतान हुआ, अन्य कार्य श्रमदान से हुआ ।

ग्राउण्ड फ्लोर पर हाल 25x50 वर्ग फुट सामने बरान्डा व दोनों ओर पैसेज है। नीचे ही पूज्य श्री महाराज जी के कक्ष का निर्माण हुआ, अब वहाँ प्रार्थना मण्डल संचालित हो रहा है। ऊपर एक बड़ा हाल व दो कमरे हैं जहाँ पूर्णिमा व नवरात्रि जाप में महिला – पुरुष विश्राम कर सकते हैं। यहाँ प्रतिदिन सायँ 7 से 8 दैनिक अमृतवाणी सत्संग, रविवार को प्रातः 9 से 10 साप्ताहिक सत्संग नियमित चल रहा है। प्रत्येक पूर्णिमा पर रात्रि को 12 घण्टे के अखण्ड जाप चलता है। शारदीय नवरात्रि में सम्पूर्ण रामायण का पाठ होता है । चैत्र नवरात्रि में दिन–रात अखण्ड जाप चलते हैं, तीनों गुरुजनों के अवतरण दिवस व निर्वाण दिवस पर झाबुआ मुख्यालय के अनुरूप कार्यक्रम होते

हैं। आस–पास के ग्रामों के आदिवासी साधकों के लिए एक या दो दिवसीय खुले सत्संगों का आयोजन होता रहता है। सभी मुख्य आयोजनों की उन्हें निरन्तर सूचना दी जाती है इस कारण बड़ी संख्या में उनकी उपस्थिति सभी के लिए उत्साह वर्धक होती है ।

पौष शुक्ल पूर्णिमा विक्रम संवत् 2065 तदनुसार 11 जनवरी 2009 रविवार को प्रातः 8 बजे श्रीरामशरणम् कल्याणपुरा का शुभ उद्घाटन परम पूज्य श्री डॉ विश्वामित्र जी महाराज के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। दो दिन पूर्व 11 अनुभवी ज्ञानी ब्राह्मणों द्वारा ग्रह शांति, यज्ञ हवन इत्यादि के आयोजन हुए। दुर्गा सप्तशती के 10 पाठ हवनात्मक सम्पन्न हुए।

11 जनवरी 2009 को उदघाटन् के लिए पूज्य श्री महाराज जी जब प्रातः 7 बजे ग्राम कल्याणपुरा पहुँचे तो गाँव की सीमा पर हज़ारों–हज़ारों लोगों ने उनका हृदय से स्वागत किया। फूलों की वर्षा की गई जिसे महाराज जी ने उचित नहीं माना, झाबुआ के साधकों ने उन्हें ऐसा न करने का अनुरोध किया। वहाँ कार से उतर कर श्री महाराज जी नंगे पैर चले, आगे आगे राम धुन गाते हजारों आदिवासी महिला पुरुष भाव विभोर होकर नृत्य करते हुए चल रहे थे। सड़क के दोनों ओर स्थित सभी घरों पर दीपक जल रहे थे, घर–घर रंगोली से आँगन व पुष्पों से सड़कें सज रही थीं। विशेष उल्लेखनीय तो यह है कि हर समाज व हर धर्म के लोगों ने अपने घर दीपक व लाइटिंग की थी व रंगोली भी बनाई थी, इसमें हिंदू, मुस्लिम, बोहरे (सुन्नी मुसलमान) व क्रिश्चियन के हर घर सजे थे। सभी ने हाथ जोड़कर श्री महाराज जी का अभिवादन किया।

पूज्य श्री महाराज जी ने जब यहाँ का वातावरण देखा, सर्वसुविधायुक्त भवन देख कर वे बहुत प्रसन्न हुए। होने वाले सभी कार्यक्रमों की घोषणा भी पूज्य श्री महाराज जी ने की। उसके बाद निर्देश दिए कि अब इसे अमृतवाणी सत्संग हॉल नहीं अपितु श्रीरामशरणम् कल्याणपुरा ही कहा जायेगा।

उद्घाटन के बाद राजकीय हायर सैकण्डरी स्कूल के विशाल मैदान में नाम दीक्षा का कार्यक्रम आयोजित हुआ। इसमें 2199 पुरुषों व 1618 महिलाओं ने नाम दीक्षा ग्रहण की। इनमें से बड़ी संख्या में 5-10 कि.मी. की दूरी के ग्रामीण थे। यहाँ युवा साधकों की बड़ी अच्छी संख्या है जो एकजुट हो कर सेवा कार्य करते हैं। इन्होंने 2018 में 7125 एवं 2019 में 9072 लोगों की नाम दीक्षा करवाई।

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम

(जून 2024 से सितम्बर 2024)

साधना सत्संग, खुले सत्संग एवं नाम दीक्षा का विवरण

- **सैल्सबर्ग पैनसिलवेनिया** अमेरिका में 27 से 30 जून तक खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 19 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हरिद्वार** में परम पूजनीय डॉ श्री विश्वामित्र जी महाराज के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में 30 जून से 3 जुलाई तक साधना सत्संग का आयोजन हुआ।
- **मुम्बई**, में 14 जुलाई को एक दिवसीय खुला सत्संग हुआ जिसमें 50 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हरिद्वार** में गुरु पूर्णिमा के उपलक्ष्य में 16 से 21 जुलाई तक साधना सत्संग का आयोजन हुआ।
- **श्रीरामशरणम् दिल्ली**, में 21 जुलाई को गुरु पूर्णिमा के उपलक्ष्य में नाम दीक्षा का आयोजन हुआ जिसमें 168 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

- **श्रीरामशरणम् दिल्ली**, में परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में 27 से 29 जुलाई तक खुले सत्संग का आयोजन हुआ।
- **रोहतक**, हरियाणा में 10 एवं 11 अगस्त को दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ।
- **नीम का थाना**, राजस्थान में 11 अगस्त को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसमें 101 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **श्रीरामशरणम् दिल्ली** में 18 अगस्त को 22 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **औबेदुल्लागंज**, मध्य प्रदेश में 7 सितम्बर को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 195 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **होशियारपुर**, पंजाब में 8 सितम्बर को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 44 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की ।
- **रेवाड़ी**, हरियाणा में 14 से 15 सितम्बर तक दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ।
- **श्रीरामशरणम् दिल्ली** में 22 सितम्बर को नाम दीक्षा होगी।
- **गुरदासपुर**, पंजाब में 27 से 29 सितम्बर तक तीन दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन होगा जिसमें 29 सितम्बर को नाम दीक्षा होगी।
- **हरिद्वार** में परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में 30 सितम्बर से 3 अक्तूबर तक तीन रात्रि साधना सत्संग का आयोजन होगा।

विशेष सूचना -

परम पूज्य डॉ विश्वामित्र जी महाराज के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में जो साधना सत्संग 13 से 16 मार्च तक हर वर्ष हरिद्वार में लगता था, इस बार उन्हीं दिनों दिल्ली में होली सत्संग होने के कारण, नहीं होगा। 15 मार्च को श्रीरामशरणम् दिल्ली में श्री रामायण जी का अखण्ड पाठ होगा। इस पाठ का 15 मार्च (शनिवार) को प्रातः 8:00 बजे शुभारम्भ होगा और 16 मार्च (रविवार) को प्रातः 9:30 बजे इसकी पूर्ति होगी।

परम पूज्य स्वामी सत्यानन्द जी महाराज के भगवद्साक्षात्कार शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में श्रीरामशरणम् दिल्ली में कार्यक्रम –

- **श्रीरामशरणम् दिल्ली** में अगस्त में 10 से 11 अगस्त तक और सितम्बर में 7 से 8 सितम्बर तक श्री रामायण जी का अखण्ड पाठ हुआ।
- अक्तूबर 2024 से मार्च 2025 तक **श्रीरामशरणम दिल्ली** में अखण्ड रामायण जी की तिथियाँ

1. अक्तूबर 2.10.24 बुद्धवार से 3.10.24 गुरुवार (परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज का अवतरण दिवस)
2. दिसम्बर 31.12.24 मंगलवार से 1.1.25 बुद्धवार
3. जनवरी 25.1.25 शनिवार से 26.1.25 रविवार
4. फरवरी 22.2.25 शनिवार से 23.2.25 रविवार
5. मार्च 15.3.25 शनिवार से 16.3.25 रविवार पूजनीय डॉ विश्वामित्र जी महाराज का अवतरण दिवस।

- इसके अतिरिक्त **श्रीरामशरणम् दिल्ली** में 7 एवं 8 नवम्बर को श्री भक्तिप्रकाश का पूरा पाठ होगा। ये पाठ दोनों दिन दैनिक सत्संग में श्री अमृतवाणी पाठ के पश्चात् प्रातः 7:40 बजे से सायं 6:30 बजे तक होंगे। इसके पश्चात् सायं 7:00 बजे तक भजन कीर्तन एवं परम पूज्य श्री महाराज जी की धुन होगी।
- **जालन्धर** में भगवद्साक्षात्कार शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में हर बृहस्पतिवार (गुरुवार) को सायं 5:30 बजे से 7:00 बजे तक विशेष सत्संग का आयोजन किया गया है। गुरु पूर्णिमा 21 जुलाई (रविवार) से श्री रामायण जी का शुभारम्भ हुआ जिसकी पूर्ति नवम्बर में होगी। इसके पश्चात् श्री भक्ति प्रकाश, श्रीमद्भगवदगीता एवं परम पूज्य स्वामी सत्यानन्द जी महाराज के अन्य ग्रन्थों के पाठ साल भर करने का निर्णय लिया गया है।
- **श्रीरामशरणम्** के अन्य केंद्रों (Centres) में भी अपनी–अपनी सुविधा अनुसार विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन हो रहा है।

निर्माणाधीन श्रीरामशरणम् की प्रगति

- **नागौद**, मध्य प्रदेश में श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य तीव्र गति से चल रहा है।
- **जंडियालागुरु**, पंजाब में श्रीरामशरणम् में अखण्ड जाप का कमरा व 150 साधकों के खुले सत्संग में ठहरने के लिए नव निर्मित स्थान का उद्घाटन मार्च 2025 में होने की सम्भावना है। ■

अध्यात्म • लोगों ने एक-दूसरे को राम- राम कहकर संबोधित करने का लिया संकल्प

हनुमान मंदिर में हुआ अमृतवाणी सत्संग

भास्कर संवाददाता | राघौगढ़

श्रीरामशरणम परिवार गुना द्वारा रविवार को श्री अमृतवाणी सत्संग का आध्यात्मिक कार्यक्रम शाम 5:30 से 06:30 तक प्राचीन श्री संकट मोचन हनुमान के मंदिर ग्राम-आवन राघौगढ़ में आयोजित किया गया। तेज बारिश के माहौल में प्रभु श्रीराम-नाम के इस दिव्य एवं अलौकिक पाठ से वहां का वातावरण पूरा \'राम\' मय हो गया। आस-पास से करीब 25 गांव के लोगों ने तेज बारिश होने के उपरांत आकर इस विशुद्ध आध्यात्मिक कार्यक्रम में भाग लिया व श्री अमृतवाणी संकीर्तन का पाठ कर राम- नाम का गुणगान किया गया।

कार्यक्रम के पश्चात स्थानीय ग्रामवासियों द्वारा संकल्प लिया की अब से हम सभी हमारी पुरानी सभ्यता को धारण कर राम- राम कहकर ही एक-दूसरे को संबोधित करेंगे, क्योंकि इस राम- नाम में ही इस सारे ब्रह्मांड की प्रत्येक शक्ति समाई हुई है। सारे देवी- देवतागण युगों-युगों से सिर्फ राम- नाम का गुणगान करते आ रहे हैं, लेकिन आज के इस दौर में हम हमारी मुख्य संस्कृति को भूलते जा रहे हैं एवं मुख्य धारा से भटक गए हैं। तभी हम सभी के जीवन में अशांति का माहौल बढ़ता जा रहा है। श्रीरामशरणम, अमृतवाणी सत्संग के राम- नाम संकीर्तन पाठ ने हमें फिर से राम- मय कर दिया है। श्री अमृतवाणी सत्संग का यह विशुद्ध आध्यात्मिक कार्यक्रम श्रीरामशरणम कमला भवन नयापुरा, गुना में प्रत्येक रविवार को प्रातः 08 बजे से 09:15 तक होता है जो पिछले 35 वर्षों से निरंतर जारी है। परम पूज्य श्रीस्वामी सत्यानंद महाराज द्वारा वर्ष- 1925 में श्रीरामशरणम संस्था का निर्माण किया। संस्था ने पूरे विश्व भर में राम- नाम की अलख जगाकर लाखों-करोड़ों जीवों का कल्याण कर उनका उद्धार किया है। श्री अमृतवाणी सत्संग का कार्यक्रम पूर्ण अनुशासन व सादगी के साथ देश-विदेश में कई स्थानों पर आयोजित किया जाता है। जिसमें किसी भी प्रकार का दिखावा या आडंबर नहीं है, यहां किसी प्रकार की दान- दक्षिणा नहीं ली जाती है, यहां पर केवल राम- नाम का ही प्रसाद लोगों को दिया जाता है जिसका स्वाद जिव्हा पर लगने से मनुष्य के जीवन पर्यंत कभी नहीं जाता। कार्यक्रम में स्थानीय विधायक जयवर्धन सिंह, राजगढ़ विधायक बापू सिंह तंवर सहित गुना, रूठियाई, राघौगढ़ आवन के साथ आस-पास गांवों बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए।

राघौगढ़ | आवन हनुमान मंदिर में हुए सत्संग में मौजूद लोग।

राममय हुआ आवन, श्रीअमृतवाणी सत्संग में शामिल हुए दो दर्जन से अधिक गांवों में हजारों श्रद्धालु

सत्ता सुधार ■ गुना

श्रीरामशरणम् परिवार द्वारा श्रीअमृतवाणी सत्संग का आध्यात्मिक कार्यक्रम नियत प्राचीन श्रीसंकट मोचन हनुमानजी के मंदिर ग्राम आवन में आयोजित किया। इस दौरान तेज वारिश के माहौल में प्रभु श्रीराम नाम के इस दिव्य एवं अलौकिक पाठ से वहां का वातावरण पूरा राममय हो गया। आस-पास से करीव दो दर्जन से अधिक गांव के लोगों ने तेज वारिश होने के उपरांत आकर इस विशुद्ध आध्यात्मिक कार्यक्रम में भाग लिया। यहां उन्होंने श्रीअमृतवाणी संकीर्तन का पाठ कर राम- नाम का गुणगान किया गया। इस विशेष कार्यक्रम के पश्चात स्थानीय ग्राम वासियों द्वारा संकल्प लिया कि अव से वह सभी हमारी पुरानी सभ्यता को धारण कर राम-राम कहकर ही एक दूसरे को संवोधित करेंगे। क्योंकि इस राम नाम में ही इस सारे व्रम्हांड की प्रत्येक शक्ति समाई हुई है। सारे देवी-देवतागण युगों-युगों से सिर्फ रामनाम का गुणगान करते आ रहे हैं। लेकिन आज के इस दौर में हम हमारी मुख्य संस्कृति को भूलते जा रहे हैं एवं मुख्य धारा से भटक गए हैं। तभी हम सभी के जीवन में अशांति का माहौल वढ़ता जा रहा है। श्रीरामशरणम, अमृतवाणी सत्संग के राम- नाम संकीर्तन पाठ ने हमें फिर से राममय कर दिया है।

दरअसल श्रीअमृतवाणी सत्संग का यह विशुद्ध आध्यात्मिक कार्यक्रम श्रीरामशरणम कमला भवन नयापुरा गुना में प्रत्येक रविवार को प्रातः 08 वजे से 09:15 तक होता है, जो पिछले 35 वर्षो से निरंतर जारी है। श्रीस्वामी सत्यानंद महाराज द्वारा वर्ष 1925 में श्रीरामशरणम संस्था का निर्माण किया। इस विशुद्ध आध्यात्मिक संस्था ने पूरे विश्व भर में राम- नाम की अलख जगाकर लाखों-करोड़ों जीवों का कल्याण कर उनका उद्धार किया है। श्रीअमृतवाणी सत्संग का कार्यक्रम पूर्ण अनुशासन वा सादगी के साथ देश- विदेश में अनेको स्थान पर होता है। इस विशेष आध्यात्मिक कार्यक्रम में स्थानीय विधायक जयवर्धन सिंह, राजगढ़ विधायक श्रीवापू सिंह तवंर सहित गुना, रूठियाई, राघौगढ़ आवन के साथ आस-पास गांव से लगभग 2500 से भी अधिक लोगों ने सम्मिलित होकर इसका पुण्य लाभ लिया।

Children's Page

Quiz time!

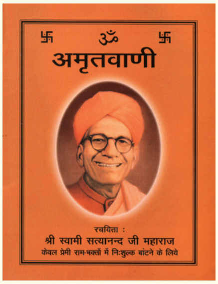

Refer to our sacred book Amrit Vaani and answer the following questions.

1) How many times is the word 'Ram' sung in the first section (Ram Kripaa Avtaran) of our sacred book Amrit Vaani.

Answer: ....

2) Complete the verse below from page number 10 of the sacred book Amrit Vaani.

Maat-Pitaa Bhandhav Sut Daaraa,
Dhan Jann Saajan Sakhaa Pyaaraa.
Ant Kaal De Sake Naa Sahaaraa,
Ram-Ram Tera

Answer: ....

3) Sing the Dhun on the last page of the Amrit Vaani (page 32) from the beginning to the end, and time yourself to see how long it takes. Record your time below.

Time: minutes and seconds

Answer: ....Minutes and ....Seconds

4) Who is our founding guru who also wrote our sacred book Amrit Vaani. Please write his divine beloved name below.

Answer: ....

....

....

....

....

....

....

5) How many verses are there in total in the AMRITVAANI section (starting page 5) of the Amrit Vaani book.

Answer: ....

Well done! ■

Anubhuti

by an eleven and half year old devotee

Once in school, I was climbing up the stairs with a lot of stuff. Unfortunately, at the last step, I tripped over and all the things fell off. Luckily I gripped the last step and was protected from severe injuries. However, I hurt my knee and limped painfully to the class. Since, the lights were switched off, the teacher could not notice me limping and was also in a hurry to go. I sat in my chair with my head down. My eyes welled up with tears and I thought of Maharajji. Surprisingly, within a second the pain disappeared and the tears vanished as by magic. It is true that He is always everywhere with His loved ones, every second and protects them. In His words He is always (अंग–संग) with us.

संस्मरण

मेरी माता जी ने श्री स्वामी जी महाराज से दीक्षा ली थी। मैं बचपन से ही अपनी माता जी के साथ श्री रामशरणम् आती थी। मेरे माता जी ने मुझे हरिद्वार के साधना सत्संग में जाने की प्रेरणा दी। उसके बाद मैंने कई हरिद्वार के साधना सत्संग श्री महाराज की चरण–शरण में लगाए। श्रीरामशरणम् मेरे जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया।

श्री प्रेम जी महाराज बहुत ही सरल थे और बहुत सेवा किया करते थे। वे बहुत से साधकों के घरों में जाते थे। वे घर में राम–राम करते–करते घुसते और एक मिनिट में ही वापस चले जाते थे। ऐसा लगता था कि श्री महाराज जी चलते नहीं, भागते थे। वे दो–दो कदम इकट्ठे लेते थे क्योंकि उन्हें बहुत जगह जाना होता था और सब काम समय पर करना होता था। अगर किसी को कोई तकलीफ होती थी तो उनको पता चल जाता था। वे वहीं पहुँचते थे जहाँ किसी को ज़रूरत होती थी। वे अपने स्पर्श से ही पीड़ा हर लेते थे और वह पीड़ा अपने ऊपर भी ले लेते थे।

श्री महाराज जी बहुत ही विनम्र थे। उनकी आँखों में इतना तेज था कि कोई उनकी ओर देख नहीं पाता था। सब साधक उनसे इतने प्रभावित थे कि उनकी एक नज़र के लिए तरसते थे। अपनी कृपा दृष्टि से सब के कष्ट हर लेते थे। वे होमियोपैथिक दवाई देते थे। श्री महाराज जी कई लोगों को आर्थिक सहायता करते थे पर इस बात का किसी को भी पता नहीं लगने देते थे। उन्होंने कभी किसी से कुछ नहीं लिया और जीवन भर दिया ही दिया। शुरु–शुरु में श्री महाराज जी साईकल पर ही सब जगह जाते थे, बाद में उन्होंने स्कूटर ले लिया।

श्री महाराज जी के बॉस बहुत सख्त थे पर श्री महाराज ने उनकी बहुत सेवा करी। इससे उनके बाकी साथियों को उनके सेवा भाव का पता चला और वे उनके शिष्य बन गए। वे अपने आपको कभी गुरु की तरह दिखाते नहीं थे उनकी हर बात में श्री स्वामी जी महाराज का ही वर्णन होता था। लोगों को उनके गुरु होने की बात उनके शिष्यों से पता चलती थी। जो भी उनके सम्पर्क में आते थे वे उनके शिष्य बन जाते थे।

सबसे प्रेम करते थे सबको एक समान आदर देते थे। ऑफिस के चपरासी को भी चाय–कॉफी पिलाते थे। महाराज जी की आदत थी कि जब वे चाय पीते थे तो बिस्कुट को चाय में डिप करके खाते थे। श्री महाराज जी बहुत सरल और बाल तुल्य थे पर वे भीतर से सब जानते थे।

उस समय हरिद्वार साधना सत्संग के नामों का चयन होने के बाद Typewriter पर list तैयार की जाती थी। अगर एक भी गलती होती थी तो पूरा पेज दुबारा से टाईप किया जाता था।

हर साधना सत्संग की तैयारी पूरे जोर–शोर से होती थी जैसे कि अपने घर में शादी हो। उनके प्रवचन बहुत छोटे होते थे पर सबको ऐसा लगता था कि मेरे लिए ही कहा गया है। श्री महाराज जी हमें श्री भक्ति प्रकाश को पढ़ने के लिए कहा करते थे। अपना प्रवचन 'महाराज कहा करते' से शुरू करते थे। अपने बारे में कभी कोई बात नहीं करते थे और सदा श्री स्वामी जी महाराज की ही बातें और प्रशंसा करते थे। उन्होंने कभी यह नहीं दिखाया कि मैं गुरु हूँ। एक बार किसी ने उनको महाराज जी कह कर पुकारा तो उन्होंने कहा,'' अगर आपका नाम कोई बदल दे तो आपको कैसा लगेगा।'' हांसी साधना सत्संग कि खुली बैठक में हज़ारों लोग उनकी एक झलक पाने के लिए आते थे।

श्री महाराज जी आधुनिक विचारों के थे वे चाहते थे कि बच्चे अच्छा पढ़ें और अपने पैरों पर खड़े हों। 1973 में मेरे पिता जी श्री महाराज जी से मिले और मेरे विवाह की बात की। श्री महाराज जी ने कहा कि पहले इससे नौकरी करवाओ। मेरे परिवार में लड़कियों को नौकरी करने का रिवाज़ नहीं था। श्री महाराज जी ने नौकरी करने के बारे में मुझे तीन बातें कहीं। ''पहले, तो आपको किसी के आगे हाथ नहीं फैलाना पड़ेगा। दूसरा, आप दूसरों को दे पाओगे। तीसरा, आपका समय अच्छे से व्यतीत होगा।'' मैंने अपने जीवन में पाया कि यह सब मेरे लिए कितना महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। ये दिखता है कि महाराज जी कितने खुले विचारों के थे।

मुझे बहुत जिज्ञासा थी कि मैं उनके ऑफिस का कमरा देखूँ। जब–जब मैं उनके कमरे में गई तो वे पत्रों का जवाब दे रहे होते थे। एक बार मुझे हँस कर कहा, ''आप क्या कहोगे कि जब भी मैं आपको देखती हूँ आप पत्र लिख रहे होते हो।''

श्री महाराज जी हमारे घर आया करते थे। जिस तरह वे कई साधकों के पैर दबाते थे उसी तरह मेरी माता जी के भी पैर दबाने लग जाते थे। हमारा बहुत छोटा सा घर था श्री महाराज जी कहते थे, ''आपका घर कितना साफ है।'' उनसे प्रशंसा सुनकर बहुत खुश हो जाते थे। हमारी बहुत इच्छा होती थी कि वे कुछ खाएँ। एक दफा मैंने उनको पूछा कि आपको क्या पसन्द है। श्री महाराज जी ने कहा,''मुझे सब कुछ अच्छा लगता है। आप खुश रहो।''

जब मेरे माता जी का देहान्त 1983 में हुआ तो वे मेरा बहुत ध्यान रखते थे। वे कई बार मुझे अपने घर ले जाते थे ताकि मैं उस उदास माहौल से बाहर निकल सकूँ।

श्रीरामशरणम् और आदरणीय गुरुजनों के प्रेम व कृपा ने मेरे जीवन को सार्थक बना दिया। ■

Calendar

Open Satsang (October 2024 to March 2025)		
Pathankot	26 to 27 October	Saturday to Sunday
Gwalior	6 to 7 November	Wednesday to Thursday
Jammu	8 to 10 November	Friday to Sunday
Kathua	17 November	Sunday
Sujanpur	22 to 24 November	Friday to Sunday
Alampur	3 December	Tuesday
Melbourne (Australia)	6 to 8 December	Friday to Sunday
Surat	21 to 22 December	Saturday to Sunday
Bhiwani	28 to 29 December	Saturday to Sunday
2025		
Jhabua	12 to 14 January	Sunday to Tuesday
Pune	18 January	Saturday
Mumbai	15 to 16 February	Saturday to Sunday
Bilaspur	21 to 23 February	Friday to Sunday
Sardarshahar	2 to 3 March	Sunday to Monday
Ratangarh	8 to 9 March	Saturday to Sunday
Delhi Holi Satsang	12 to 14 March	Wednesday to Friday
Kapurthala	22 to 23rd March	Saturday to Sunday
Narot Mehra	26 March	Wednesday
Hisar	29 to 30 March	Saturday to Sunday
Jhabua-Maun Sadhna	29 March to 6 April	Saturday to Sunday

Sadhna Satsang (October 2024 to March 2025)

Haridwar	30 September to 3 October	Monday to Thursday
Haridwar (Ramayani)	3 to 12 October	Thursday to Saturday
Haridwar	11 to 14 November	Monday to Thursday
Fazalpur (Kapurthala)	29 November to 2 December	Friday to Monday
2025		
Indore	3 to 6 January	Friday to Monday
Hansi	7 to 10 February	Friday to Monday

Poornima in (October 2024 to March 2025)

October	17	Thursday
November	15	Friday
December	15	Sunday
2025		
January	13	Monday
February	12	Wednesday
March	14	Friday

Naam Deeksha in Shree Ram Sharnam Delhi (October 2024 to March 2025)

October	13	Sunday 10-30 AM
November	3	Sunday 11AM
December	8	Sunday 11AM
2025		
January	26	Sunday 11AM
February	2	Sunday 11AM
March	16	Sunday 11AM

Naam Deeksha in Other Centers (October 2024 to March 2025)

Place	Date	Day
Pathankot	27 October	Sunday
Gwalior	7 November	Thursday
Jammu	10 November	Sunday
Kathua	17 November	Sunday
Sujanpur	24 November	Sunday
Kapurthala	1 December	Sunday
Alampur	3 December	Tuesday
Melbourne	8 December	Sunday
Devas (M.P.)	15 December	Sunday
Surat	22 December	Sunday
Bhiwani	29 December	Sunday
2025		
Indore	5 January	Sunday
Bolasa	9 January	Thursday
Dahod	10 January	Friday
Banswara	11 January	Saturday
Jhabua	12 January	Sunday
Pune	18 January	Saturday
Banmore MP	22 January	Wednesday
Faridabad	26 January	Sunday 4.00 PM
Rohtak	2 February	Sunday 3.00 PM
Guna	2 February	Sunday 6.00 PM
Hansi	9 February	Sunday
Mumbai	16 February	Sunday 6.00 PM
Ram Tirath	20 February	Thursday
Bilaspur	23 February	Sunday
Amarpatan MP	1 March	Saturday
SardarShahar	3 March	Monday 11.00 AM
Ratangarh	8 March	Saturday
Kapurthala Fazalpur	23 March	Sunday
Narot Mehra	26 March	Wednesday
Hisar	30 March	Sunday

प्रत्येक दीक्षित साधक का यह कर्तव्य है कि वह सत्य साहित्य पत्रिका खरीदें और उसे संग्रहीत करके अपने पास सुरक्षित रखे ताकि समय–समय पर उसका स्वाध्याय, चिंतन, मनन किया जा सके।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर–IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित एवं रेव स्कैनस प्राइवेट लिमिटेड, 216, सेक्टर-4, आई.एम.टी. मानेसर, गुरुग्राम, हरियाणा-122051 से मुद्रित। संपादकः मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

Publisher and printer Shri Anil Dewan for Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust, 8-A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024 and printed at Rave Scans Private Limited, 216, Sector-4, IMT Manesar, Gurugram, Haryana-122051. Editors: Medha Malik Kudaisya and Malvika Rai.

©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली

E-mail of Satya Sahitya: srs.satyasahitya@gmail.com
E-mail of Shree Ramsharnam: shreeramsharnam@hotmail.com
वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org

RNI No. DELBIL/2017/72924